फतहसागर झील तंत्र

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	प्रस्तावना	137
2.	महाराणा फतह सिंह : जीवन परिचय	138–140
3.	फतहसागर – इतिहास के पृष्ठों से	141–142
4.	फतहसागर झील लबालब	143–144
5.	फतहसागर झील पूर्ण भराव स्तर पर विहंगम् नजारा	145–146
6.	फतहसागर में वर्षा ऋतु में विविध जल स्रोतों से जल समावेश	147
7.	फतहसागर से पिछोला झील में जल आवक : एक ऐतिहासिक क्षण	148
8.	फतहसागर – आंशिक रिक्त अवस्था में	149
9.	फतहसागर – जेट एण्ड फ्लोटिक फाउन्टेन	150
10.	फतहसागर झील की शान – छोटी तलाइयाँ	151
	– उपला तालाब	152
	– उपला तालाब का प्रदूषित स्वरूप	153–154
	– छोटी तलाई	155
	– निचली तलाई	156
11.	मेवाड़ दर्शक दीर्घा : परिचय पट्ट विवरण	157–161
12.	मेवाड़ की महान् विभूतियाँ : पं. जनार्दन राय जी नागर, डॉ. मोहन सिंह जी मेहता एवं डॉ. दौलत सिंह जी कोठारी	162
13.	प्रताप स्मारक – मोती मगरी	163–165
14.	विवेकानन्द पार्क, गुरू गोविन्द सिंह पार्क	166
15.	नेहरू पार्क	167–168
16.	अन्डर दी सन एक्वेरियम	169
17.	फ्लावर शो, चित्रकारी/हस्तकला प्रदर्शनी, लेक फेस्टिवल	170–171
18.	हरियाली अमावस्या, राष्ट्रीय एकता कार्यक्रम, हथियार प्रदर्शनी	172
19.	विभूति पार्क – बप्पारावल, राणा कुंभा, राणा सांगा, रानी पद्मिनी, राणा हम्मीर सिंह, राणा राज सिंह प्रथम, गोविन्द गिरि, केसरी सिंह बारहट, विजय सिंह पथिक, पिलर एवं पेडस्टल चौक, प्रस्ताव	173–176
20.	नीमच माता मन्दिर – उदयपुर सौर वेधशाला	177
21.	फतहसागर पर पक्षी स्थल	178
22.	राजीव गाँधी पार्क, संजय गाँधी पार्क, अविकसित पार्क एवं ओपन जिम	179
23.	बोलार्ड पार्क – रानी रोड से फतहसागर झील का निखार	180
24.	श्री महाकालेश्वर सिद्ध धाम	181
25.	सज्जनगढ़	182–184
26.	प्रताप गौरव केन्द्र	185
27.	सहेलियों की बाड़ी	186–190
28.	झील से गाद निकालना	191
29.	फतहसागर पर गन्दगी एवं खरपतवार से प्रभावित क्षेत्र	192
30.	फतेश्वर महादेव, श्री गिरधर गोपाल मन्दिर, श्री नीलकंठ महादेव मन्दिर, मोती महल, मोबाइल लाइब्रेरी, नेवी प्रशिक्षण स्थल	193
31.	फतहसागर की पाल की बंसियाँ, फुटपाथ एवं पोल, बंसियों के साथ फुटपाथ, पाल पर सुन्दर बैंचे, युवाओं का झीलों को साफ रखने में योगदान	194
32.	पम्पिंग स्टेशन का स्थानान्तरण, झील के क्षेत्रफल के अनुपात में फव्वारें लगाये जावे, झील के किनारे सड़क की सतह पर बिछी पानी की पाईपलाइन भूमिगत हो, फतहसागर की पाल को नहाने व गोता लगाने वालों से मुक्त रखा जावे, फतहसागर के रानी रोड छोर पर अविकसित क्षेत्र को विकसित करना	195
33.	झील में अनियोजित निर्माणों पर रोकथाम हो, निचली तलाई के पश्चिमी छोर पर वॉक–वे, निचली तलाई के पूर्वी छोर पर पक्का वॉक–वे, पक्षियों के लिए टापुओं का निर्माण, दर्शनीय रानी रोड किनारे अस्थायी आवास सुविधा क्यों? सीमेन्ट कंकरीट स्लेब के बजाय पक्की फुटपाथ बनानी चाहिये, झीलों की नियमित सफाई अत्यावश्यक	196
34.	'नो प्लास्टिक जोन' घोषित हो, काले किवाड़ से ओवरफ्लो स्थल तक 'नो व्हीकल जोन' घोषित हो, फतहसागर पर पार्किंग व्यवस्था एवं खाद्य सामग्री की उपलब्धता	197
35.	फतहसागर पाल, मुख्य मार्ग, ट्री–गार्ड पोस्टर एवं भराव मुक्त हो, वाटर स्पोर्ट्स के लिए उपयुक्त स्थल	198
36.	फतहसागर पर सुरक्षा व्यवस्था, फतहसागर पर जेटियाँ एवं उनका रखरखाव, पाल एवं वॉक–वे	199
37.	मुख्य पाल पर आवारा कुत्ते, अव्यवस्थित कचरा पात्र, पाल की सड़क पर नाली के साथ अव्यवस्थित विद्युत केबल, अव्यवस्थित विद्युत पोल, पाल की मुख्य सड़क पर वृक्ष, पाल पर गमलों में विकसित पौधे	200
38.	नेवल प्रशिक्षण केन्द्र की सामग्री, ओवरफ्लो पुलिया के साथ अतिरिक्त पुलिया का निर्माण, फतहसागर झील संरक्षित घोषित हो, झील की प्रदूषण समीक्षा एवं परिदृश्य, सुझाव	201
39.	बड़ी तालाब	
	– प्रस्तावना	202–203
	– इतिहास के पृष्ठों से	204
	– बड़ी तालाब पाल, पूर्ण भराव स्तर एवं ओवरफ्लो	205
	– बड़ी तालाब पर्यटक स्थल के रूप में ही विकसित हो	206–207
	– बड़ी तालाब के उत्तरी–पश्चिमी छोर का विकास, बड़ी–फतहसागर नाला एवं रखरखाव	208
	– समीक्षा एवं सुझाव	209–210
40.	मदार बड़ा व मदार छोटा तालाब	
	– प्रस्तावना	211–212
	– मदार बड़ा	213
	– मदार छोटा	214–215
	– समीक्षा एवं सुझाव	216

फतहसागर झील तंत्र

प्रस्तावना : इस झील का निर्माण महाराणा जयसिंह ने सन् 1687 में करवाया, किन्तु कालान्तर में अतिवृष्टि में कारण यह झील टूट गई थी। लगभग 200 वर्ष बाद महाराणा फतहसिंह ने सन् 1888 में इस झील को चौड़ा, ऊँचा व मजबूत बनवाया। इसके पूर्व की ओर 800 मी. लम्बा बाँध बनाया जिसे वर्तमान में पाल के नाम से जाना जाता है। इसकी कुल लम्बाई एक किलोमीटर है। यह पाल पर्यटकों को काफी आकर्षित करती है। फतहसागर का आकार त्रिकोणीय है जो तीन ओर से अरावली की पहाड़ियों से घिरा है। उत्तर–पूर्व में एक पहाड़ी मोती मगरी पर प्रताप स्मारक, तो दूसरी पहाड़ी पर नीमच माता मन्दिर है। दूरस्थ पश्चिमी पहाड़ी पर सज्जनगढ़ स्थित है, जो रात्रि में जगमगाते नक्षत्र–सा प्रतीत होता है। झील के मध्य दो द्वीप – प्रथम द्वीप पर नेहरू उद्यान व द्वितीय द्वीप पर अत्याधुनिक सोलर वेधशाला स्थित है। झील पर प्रतिवर्ष हरियाली अमावस्या पर मेले का आयोजन किया जाता है जिसमें शहर एवं गाँवों के लोग भारी संख्या में सम्मिलित होते हैं। प्रतिदिन संध्या समय इस झील पर बनी पाल, सर्पाकार मार्ग व वाटिकाओं पर उमड़ता स्थानीय जन–समूह एवं पर्यटकों का मेला देखते ही बनता है। इस झील के जल का उपयोग पूर्व में सिंचाई व्यवस्था के लिए था किन्तु वर्तमान में यह पेयजल आपूर्ति के लिए उपयोग में लाया जा रहा है। इसका जल भराव क्षेत्र पूर्णतः मानसूनी वर्षा पर निर्भर करता है। अरावली पर्वत श्रेणियों व आसपास के लगभग 20.71 वर्ग कि.मी. क्षेत्र से झील को जल प्राप्त होता है। झील में तीन आन्तरिक नहरें हैं जिनके माध्यम से झील को पानी प्राप्त होता है, प्रथम पिछोला झील के स्वरूपसागर, द्वितीय मदार नहर (चिकलवास फीड़र) तथा तृतीय बड़ी झील का नाला है।

फतहसागर झील	
स्थिति	उदयपुर से पश्चिम तरफ
निकटस्थ गांव/तहसील/शहर	उदयपुर, गिर्वा
देशान्तर	73°37'00'' पूर्वी देशान्तर
अक्षांश	24°35'00'' उत्तरी अक्षांश
नदी/नाला	सीसारमा नदी, मदार नहर एवं बड़ी नाला
निर्माण समाप्ति वर्ष	1889
निर्माण लागत	11.00 लाख रुपये
बाँध का प्रकार	चिनाई बाँध
शुद्ध जलग्रहण क्षेत्र	20.72 वर्ग किलोमीटर
सकल जलग्रहण क्षेत्र	20.72 वर्ग किलोमीटर
औसत वार्षिक जल आवक	2.01 एमसीएम
सकल जल भराव क्षमता	12.09 एमसीएम
शुद्ध जल भराव क्षमता	6.99 एमसीएम
पूर्ण जलाशय स्तर	594.66 मीटर
अधिकतम् जल स्तर	595.26 मीटर
टैंक बंध स्तर	596.40 मीटर
सैल स्तर	24.99 मीटर
पूर्ण टैंक गेज	3.96 मीटर/13 फीट
स्तर – जीटीएस/आर्बिटरी	जीटीएस
अधिकतम् लम्बाई	2.40 किलोमीटर
अधिकतम् चौड़ाई	1.60 किलोमीटर
सतही क्षेत्रफल	400 हेक्टयर
औसत गहराई	5.40 मीटर
अधिकतम् गहराई	13.40 मीटर
परिधि	8.50 कि.मी.
टापू	नेहरू पार्क व सोलर ऑब्जर्वेटरी
समुद्रतल से ऊँचाई	594.66 मीटर
अधिशेष जल निकास व्यवस्था :	
– डिजाइन अधिकतम् प्रवाह	134.70 क्यूमेक
– वीयर का प्रकार व लम्बाई	वेस्ट वीयर, 24.38 मीटर
– मुख्य बहाव	गुमानियावाला नाला–आयड़ नदी–बेड़च

फतहसागर : स्वरूप सागर से लिंक नहर के माध्यम से जुड़ा हुआ है। इसके चारों ओर रिंग रोड़, सुन्दर बंसियाँ एवं अनेक कृतियों से सुसज्जित है। इसके एक ओर मोती मगरी पर भव्य प्रताप स्मारक है, दूसरी ओर सौर ऊर्जा पर अनुसंधान हेतु एक प्रयोगशाला स्थापित है। आठ छतरियों युक्त इसकी सुन्दर पाल सुप्रसिद्ध है एवं प्रत्येक दिन हजारों पर्यटकों एवं स्थानीय नागरिकों के आकर्षण का केन्द्र है। इस झील के मध्य नेहरू पार्क के साथ रानी रोड़ पर राजीव गांधी पार्क, संजय पार्क व बोलाड़ पार्क नामक सुन्दर उद्यान है। झील के उत्तरी छोर पर ऊंची पहाड़ी पर प्रसिद्ध नीमच माता मन्दिर स्थित है। यह झील भी प्रदूषण से मुक्त नहीं है। इसका उपला तालाब अत्यधिक प्रदूषित है जिसमें नियमित रूप से गन्दा पानी, सीवरेज समाहित होता है। यह जलकुम्भी व जलीय घास से प्रायः अटा रहता है।

महाराणा फतह सिंह (1884–1930) : मेवाड़ के सूर्यवंशी राजा अपने पूर्वजों की विरासत के गौरव एवं अपने राज्य के प्रति कर्त्तव्य के प्रतीक थे। प्रत्येक सूर्यवंशी राजा ने संप्रभुता के लिए लड़ाई लड़ी तथा मेवाड़ के लोगों के जीवन को सुविधायुक्त बनाने के साथ उनके सामाजिक उत्थान के लिए अपने संसाधनों को समर्पित कर दिया।

महाराणा फतहसिंह एक सच्चे सूर्यवंशी की भांति अपने पूर्वजों के पदचिह्नों पर चलते हुए मेवाड़ के सिंहासन पर एक दूरदर्शी दृष्टिकोण के साथ विराजित हुए। शिवरती शाखा में महाराणा संग्राम सिंह के चौथे पुत्र के वंशज महाराज दल सिंह के यहाँ 16 दिसम्बर, 1849 को जन्मे फतहसिंह जी को पहले गज सिंह ने गोद लिया था और बाद में उदयपुर–मेवाड़ के शासक महाराणा सज्जन सिंह ने गोद ले लिया, जिनका कोई वारिस नहीं था। महाराणा फतह सिंह ने वर्ष 1884 से 1930 तक अर्थात् 46 वर्षों तक मेवाड़ पर शासन किया।

सिंहासन पर बैठने के बाद उन्होंने प्रशासन और शैक्षणिक संस्थाओं का आधुनिकीकरण कर आमजन के जीवन स्तर में क्रान्ति ला दी। उनके शासनकाल में भू–राजस्व, बस्तियों, सड़कों, सिंचाई कार्यों और चिकित्सा सुविधाओं में अप्रत्याशित सुधार हुए। उदयपुर के राजमहलों में शिव निवास पैलेस बनाया गया। इस महल को गणमान्य एवं विशिष्ट व्यक्तियों के लिए आरक्षित रखा गया था। बाद में इसे लग्जरी होटल में तब्दील कर दिया गया। दूसरी ओर वे एकमात्र ऐसे महाराणा बन गए जो दो बार वर्ष 1903 एवं 1911 में आयोजित हुए 'दिल्ली दरबार' में शामिल नहीं हुए। उनका मानना था कि वे किसी रानी की कृपा से वे शासक नहीं बने थे और उनकी इस सोच ने उन्हें ब्रिटिश रानी के समकक्ष लाकर खड़ा कर दिया। उन्हें अपने मनोनीत उत्तराधिकारी महाराणा भोपाल सिंह के पक्ष में अपनी सभी शक्तियों का त्याग करने की सलाह दी गई थी लेकिन उन्होंने इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। हालांकि मेवाड़ की रियासत में एक सामाजिक अशांति की अनदेखी के परिणामस्वरूप महाराणा फतहसिंह जी की शक्तियों को कम करने के साथ उन्हें अधिकारिक तौर पर 28 जुलाई, 1921 को पदमुक्त कर दिया गया। भले ही उन्हें अपनी कथित उपाधि धारण करने की अनुमति दी गई लेकिन प्रभावी शक्तियाँ उनके पुत्र एवं उत्तराधिकारी भूपाल सिंह जी को हस्तान्तरित कर दी गई थी।

आधुनिक मेवाड़ के क्रांतिकारी शासक फतह सिंह जी का 80 वर्ष की आयु में 24 मई, 1930 को निधन हो गया। उन्होंने मेवाड़ के सूर्यवंशी राजा के रूप में अपनी भूमिका निभाई और समाज के प्रति अपने कर्त्तव्यों को पूर्ण किया। वर्ष 1887 में उन्हें ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा ऑर्डर ऑफ दी स्टार ऑफ इण्डिया (जीसीएसआई) के नाइट ग्रैड कमाण्डर के रूप में नियुक्त किया गया था।

महाराणा फतह सिंह ने अपने शासनकाल के दौरान वर्ष 1889 में देवाली झील पर कनॉट बाँध का पुनर्निर्माण करवाया। यह कृत्रिम झील मूल रूप से 1687 में महाराणा जय सिंह द्वारा बनाई गई थी जो 200 वर्ष बाद बाढ़ में बह गई थी। महाराणा फतह सिंह ने महारानी विक्टोरिया के बेटे प्रिन्स ऑर्थर, ड्यूक ऑफ कनॉट और स्ट्रैथर्न की यात्रा को यादगार बनाने हेतु ड्यूक ऑफ कनॉट ने इस झील के पुनर्निर्माण के लिए आधारशिला रखी। बाद में इस झील का विस्तार किया गया और इसका नाम बदलकर फतहसागर झील कर दिया गया।

महाराणा फतह सिंह जी ने चित्तौड़गढ़ किले में फतह प्रकाश पैलेस भी बनवाया, जो आधुनिक भारतीय वास्तुकला का एक भव्य नमूना है। वर्तमान में इसमें एक संग्रहालय भी संचालित है। उनके पश्चात् भूपाल सिंह जी उनके उत्तराधिकारी और मेवाड़ रियासत के महाराणा बने।

अरावली पर्वत श्रृंखला एवं इस पर छायी गहन हरियाली के मध्य स्थित उदयपुर की प्रसिद्ध फतहसागर झील एवं उसके साथ जुड़ी पाँच झीलें – पिछोला, अमरकुण्ड, रंग सागर, कुम्हारिया तालाब एवं स्वरूप सागर का अलौकिक परिदृश्य

झील, टापू और पहाड़ियों की रानी उदयपुर का सौन्दर्य मानसून की मेहरबानी से पूरे शबाब पर रहता है। नीमच माता मन्दिर से फतहसागर, मोती मगरी, अम्बावगढ़, पिछोला झील, माछला मगरा, राजमहल एवं मुख्य शहर का यह अलौकिक नजारा उदयपुर की सुन्दरता को विश्वपटल पर अद्वितीय बनाता है।

विशेषताएँ : • यह झील चारों ओर से घुमावदार रिंग रोड़ से घिरी हुई है। अपनी विशिष्ट पहचान वाली पत्थर/सीमेन्ट की बंसियों द्वारा झील का सीमांकन किया हुआ है। • रोड़ पर प्रकाश की सुन्दर व्यवस्था है। • झील की पाल आठ सुन्दर छतरियों एवं एक महल से शोभायमान है। • वर्षा ऋतु में झील के जल प्रपात पर प्रकाश व्यवस्था के साथ जल प्रपात बहुत ही सुन्दर लगता है। • झील के किनारे ऊँची पहाड़ी मोती मगरी पर महाराणा प्रताप की स्मृति में स्थापित उनकी अश्वारोही प्रतिमा और संग्रहालय मेवाड़ गौरव को प्रदर्शित करता प्रताप स्मारक है। • झील के मध्य में नेहरू पार्क बहुत सुन्दर एवं आकर्षक है। यहाँ पर मोटर बोट द्वारा जा सकते है। •पाल के पूर्वी भाग पर एक सुन्दर बगीचा एवं विभूति पार्क का निर्माण व्यवस्थित रूप से हो रहा है। • झील के दक्षिण में बोलाड़ पार्क, संजय पार्क एवं पश्चिम में सुन्दर राजीव गांधी पार्क स्थित है।

उदयपुर शहर का अद्भुत नजारा : आधा शहर – आधा पानी : इसे संरक्षित एवं सुन्दर बनाने के लिए हरित एवं जलीय दोनों क्षेत्र अतिक्रमण मुक्त रहे, यह हम सभी की जिम्मेदारी होनी चाहिये।

फतहसागर : इतिहास के पृष्ठों से ... महाराणा जयसिंह जी ने उदयपुर से 2.5 कि.मी. दूर उत्तर में देवाली गांव के पास एक तालाब बनवाया, जिसे देवाली के तालाब के नाम से जाना जाने लगा। इसका बाँध मोतीमहल से नीमच माता के पहाड़ तक लम्बा बनवाया गया। इसके दक्षिण की ओर महाराणा उदयसिंह प्रथम के बनवाये हुए मोतीमहल के खण्डहर हैं। उत्तरी पहाड़ी पर कायस्थों की कुलदेवी श्री नीमचमाताजी का शिखरबन्द मन्दिर है। इस जलाशय की प्रतिष्ठा वि.सं. 1744 (ई.स. 1687) में की गई तथा साथ ही थूर के तालाब को भी इसी समय बनवाया गया था। इसका बाँध अधिक ऊँचा न होने तथा जल की आय कम होने के कारण इसका जल दक्षिण में दूर–दूर तक नहीं फैल सकता था। यह पुराना बाँध महाराणा भीमसिंहजी के समय में अतिवृष्टि होने से टूट गया और सहेलियों की बाड़ी भी वीरान हो गई।

महाराणा श्री फतहसिंहजी ने 6,14,189 रुपये लगाकर वि.स. 1945 (ई.स. 1888) में इस बाँध को खासा चौड़ा, ऊँचा और सुदृढ़ बनवाया। इस बाँध की नींव का पत्थर महारानी विक्टोरिया के तृतीय पुत्र ड्यूक ऑफ कनॉट ने 4 अप्रेल, 1889 ई.सं. (चैत्र सुद 4 सं. 1945) में रखा। इसलिए बाँध को केनॉट बांध कहा जाता है और तालाब महाराणा फतहसिंहजी के नाम से फतहसागर के रूप प्रसिद्ध हुआ।

बाँध 853.4 मीटर लम्बा है एवं शिखर पर यह 17.06 मीटर चौड़ा है। तालाब 2.41 कि.मी. लम्बा, 1.609 कि.मी. चौड़ा तथा 10.66 मीटर गहरा था। इसकी जल भराव क्षमता 15.62 मिलियन क्यूबिक मीटर है। इस तालाब में पानी की आवक प्रारम्भ में बहुत कम थी। इस क्रम में मदार छोटा व बड़ा तालाब के पूर्ण भराव उपरान्त अतिरिक्त जल को आहड़ की नदी में चिकलवास के पास एक बंधा बांधकर एक नहर के माध्यम से तथा फतहसागर के दक्षिण में स्थित पिछोला तंत्र की स्वरूपसागर झील से 0.60 कि.मी. लम्बी नहर द्वारा भी इसे जोड़ा गया जिससे सीसारमा नदी का अतिरिक्त जल इसमें समावेशित किया जा सके। इस लिंक नहर में आसानी से नाव आ–जा सकती है। इसी तरह बड़ी के तालाब के पूर्ण भराव

फतहसागर का भव्य स्वरूप : मोती मगरी से

फतहसागर का भव्य स्वरूप : नीमच माता मन्दिर से

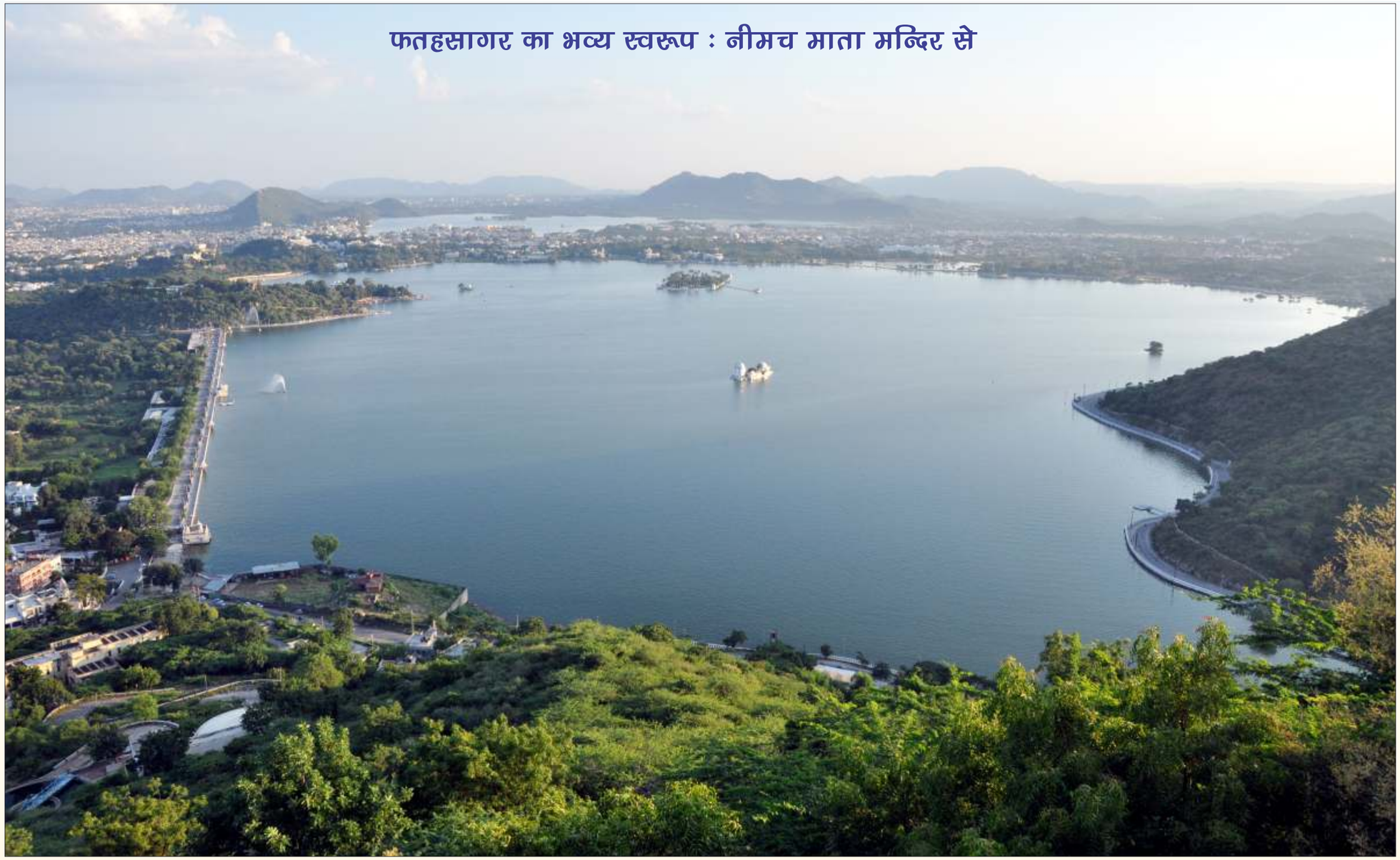

उपरान्त अतिरिक्त जल एक नाले के माध्यम से प्राकृतिक रूप से इस तालाब में समाहित होता है। इन सभी प्रयासों के उपरान्त इस तालाब की जल क्षमता में पर्याप्त वृद्धि हुई एवं यह तालाब प्रतिवर्ष लगभग भरा रहता है।

पिछोला–फतहसागर की लिंक नहर से फतहसागर के बांध तक तालाब के किनारे घुमावदार पत्थर की बंसियों वाली 1.609 कि.मी. लम्बी सड़क हरी–भरी पहाड़ियों के साथ–साथ नाले तक लायी गयी। फतहसागर का नाला काफी ऊँचाई से गिरने के कारण मनोहारी दृश्य प्रस्तुत कर दर्शनार्थियों का मन मोह लेता है। यहाँ पर सूर्यास्त के समय का दृश्य भी बड़ा ही मोहक होता है। श्रावण मास की अमावस्या तथा श्रावण शुक्ला एकम को यहाँ क्रमशः पुरुषों एवं महिलाओं का प्रसिद्ध मेला आयोजित होता है जिसे '**हरियाली अमावस्या का मेला**' कहा जाता है। इसमें ग्रामीण आदिवासी एवं शहरी क्षेत्रों से हजारों स्त्री–पुरुष नीमच माताजी के दर्शन के साथ फतहसागर की पाल और सहेलियों की बाड़ी में भ्रमण एवं मनोरंजन के लिए आते हैं।

यहां पर एक नाले का जल बहुत ऊँचाई से गिरता है जो दर्शनार्थियों का मन मोह लेता है। इस तालाब का जल प्रारम्भ में सिंचाई हेतु उपयोग में लिया जाता था। इस हेतु प्रथम एवं अंतिम छतरियों से नहरें निकाली गई थी। ई.सं. 1993 से इस तालाब के जल का उपयोग पेयजल के रूप किया जा रहा है।

बाँध के ऊपर ठीक मध्य में संगमरमर का मोती महल बना हुआ है, जो पहले महाराणा जगतसिंहजी प्रथम के बनवाये हुए कुँअरपदों के महलों में जहाँ अभी शंभूनिवास महल है, वहां था। उन कुँअरपदों के महलों को गिरवाकर वहां अंग्रेजी तर्ज का महल महाराणा शंभूसिंहजी ने बनवाया और इस मोतीमहल को कुछ अरसे बाद महाराणा सज्जनसिंहजी ने शंभूपोल दरवाजा कोट बुर्ज बनवाकर मोती चौक दक्षिण में स्थापित किया, जब महाराणा फतहसिंहजी साहब ने शिवनिवास महल बनवाना प्रारम्भ किया तब इसको वहां से उठवा कर यहां बाँध के मध्य में स्थापित कर दिया। उदयपुर के सबसे दर्शनीय

स्थलों में से एक है – फतहसागर झील। चाहे सुबह–सांय सैर करने वाले हो, जॉगिंग करने वाले हो, साईकिल चलाने वाले हो, झील के किनारे शाम की ताजगी महसूस करने वाले या स्नान करने और तैरने वाले हो, बोटिंग या साहसी जल क्रीड़ाएँ करने वाले हो तथा मोती मगरी स्थित महाराणा प्रताप स्मारक एवं झील के मध्य स्थित नेहरू पार्क एवं सौर वेधशाला भ्रमण हो, झील के पश्चिमी शांत स्थल में जलीय पक्षियों का कलरव एवं क्रीडाएँ, सलेटी पट्टियों से निर्मित झील की सफेद रंग की बँसियाँ, घुमावदार रानी रोड़, एकदम पीछे पृष्ठभूमि में बाँसद्रह पहाड़ी (गिर्वा घाटी की सबसे ऊँची पहाड़ी) के ऊपर स्थित सज्जनगढ़ के साथ सूर्यास्त के समय जन–मानस एवं पर्यटक हेतु फतहसागर के पास इतना कुछ है कि फतहसागर के बिना उदयपुर की कल्पना नहीं की जा सकती है। इस घाटी की भू–आकृतिक विशेषताओं के कारण इस झील में भी कई द्वीप हैं। दक्षिण–पश्चिम भाग में स्थित सबसे बड़े द्वीप को नेहरू आईलैण्ड पार्क के रूप में विकसित किया गया है।

उदयपुर में सौर वेधशाला फतहसागर झील के उत्तर–पश्चिमी भाग में स्थित एक छोटे द्वीप पर स्थापित है। उदयपुर की यह वेधशाला गोंग (GONG – The Globo Oscillation Network Group) विश्व के 6 स्थानों में से एक हैं। यहाँ सूर्य की आन्तरिक संरचना तथा गति विज्ञान के विस्तृत अध्ययन का संचालन किया जाता है। पाल पर फाइलाइट से बनी बहुत सी छतरियाँ, गुम्बद युक्त चौकोर बुर्जे हैं। झील का परिसर फाइलाइट के खंभों और पत्थर की पट्टियों की दीवार से घेरा गया है जो सुरक्षा तो प्रदान करती ही है, दृश्यावली में भी बाधा उपस्थित नहीं करती है। झील के पश्चिमी छोर की सड़क 'रानी रोड' कहलाती है।

उदयपुर की मुख्य झीलें आपस में जुड़ी हुई हैं। सीसारमा नदी का पानी पिछोला से अमरकुण्ड या कुम्हारिया तालाब से बहता हुआ रंग सागर – स्वरूपसागर – लिंक नहर के माध्यम से फतहसागर में समाहित होता है। फतहसागर भरने का यह मुख्य स्रोत है।

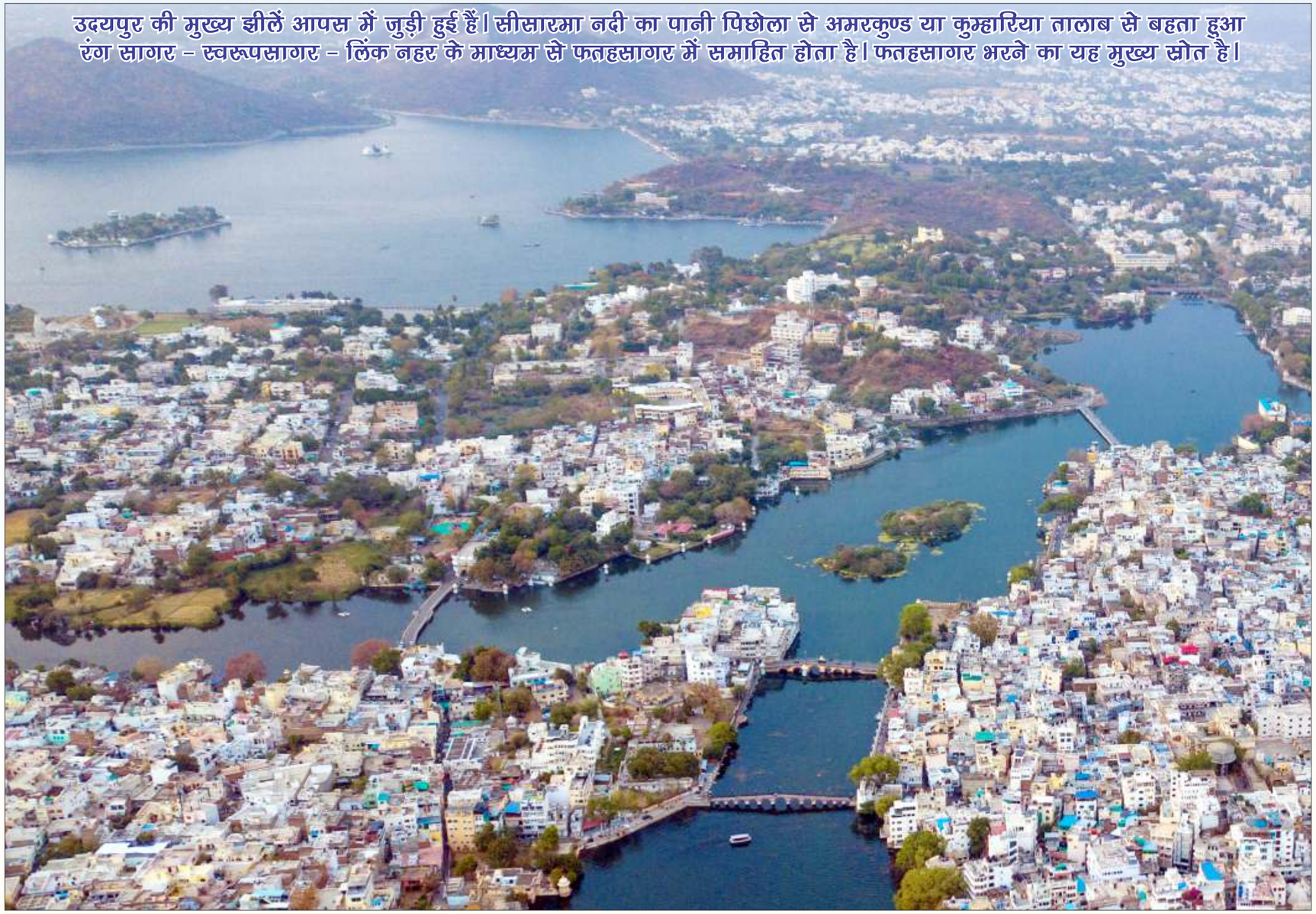

(1) फतहसागर के वर्ष 1910 में लिए गए चित्र के अनुसार बाँध की रपट पर लोहे के गेट नहीं थे। भराव क्षमता 11 फीट से अधिक होने पर पानी रपट से बहकर एक मनोहारी दृश्य का अहसास कराता था।
(2) एक जैसी बनावट की पत्थर की बंसियाँ उस समय भी विद्यमान थी।
(3) फतहसागर के पूर्वी छोर पर हरीतिमा से भरपूर मोती मगरी एवं सर्पाकार मार्ग – सुन्दरतम् दृश्य।
(4) फतहसागर के पूर्ण भराव स्तर पर पाल का विस्तृत स्वरूप।

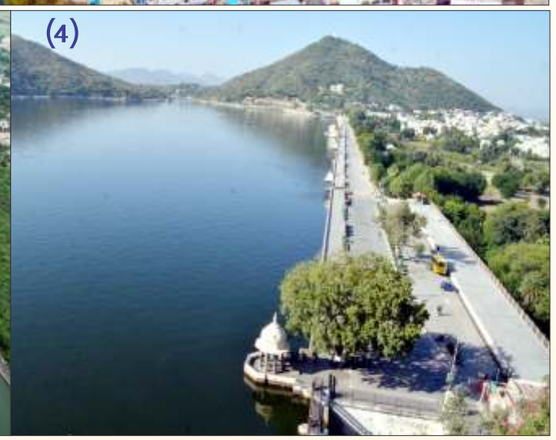

फतहसागर पाल
ओवरफ्लो का मनमोहक नजारा

उदयपुर का प्रत्येक व्यक्ति प्रतिवर्ष फतहसागर के इस मनोहरी ओवरफ्लो को देखने के लिए लालायित रहता है। जब यह झरना गिरता है तो उदयपुर शहर में एक उत्सव सा माहौल रहता है। सायंकालीन रोशनी में इसका यह नजारा और अद्भुत हो जाता है तथा जन सैलाब इसे देखने के लिए उमड़ पड़ता है। ओवरफ्लो की यह बनावट हमें विरासत में मिली है, इसकी सुन्दरता में और विकास हो, यह कामना है। यह नजारा पूरे वर्ष प्रतिदिन किसी निश्चित समय पर पर्यटकों के मनोरंजन हेतु कृत्रिम रूप से उच्च क्षमता वाले पम्पों द्वारा ओवरफ्लो के पानी को रिसाईकिल कर बनाया रखा जा सकता है।

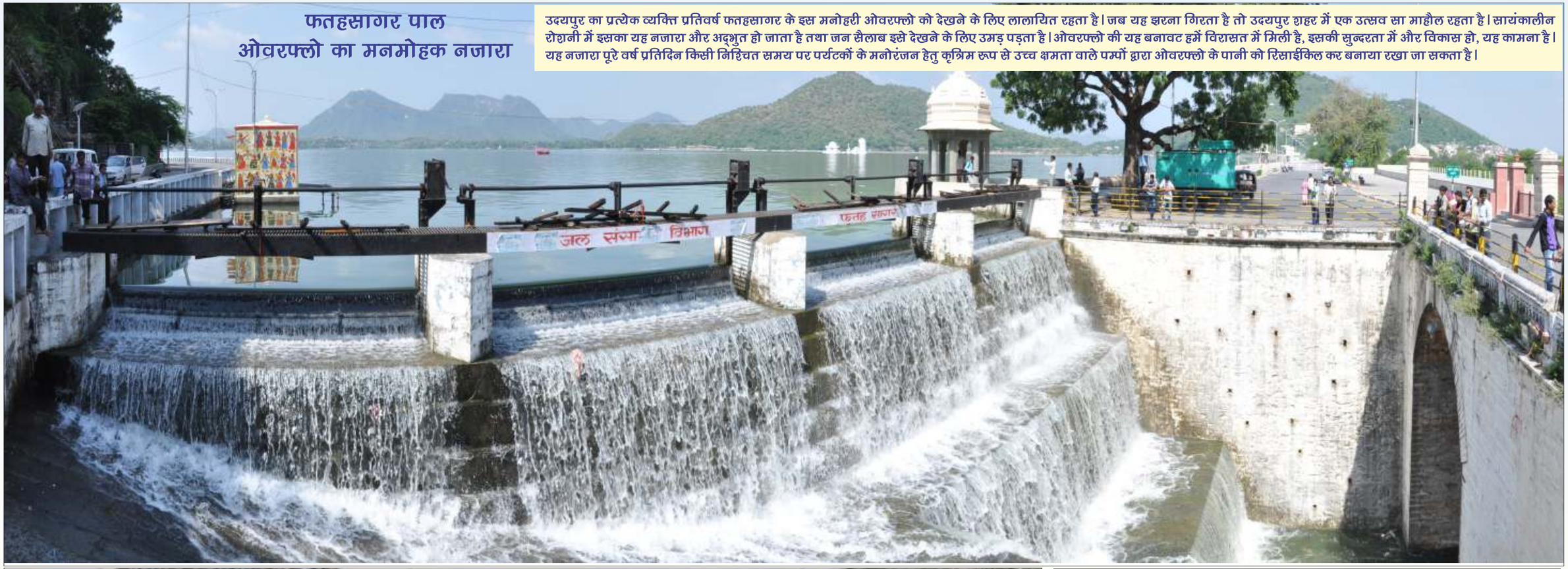

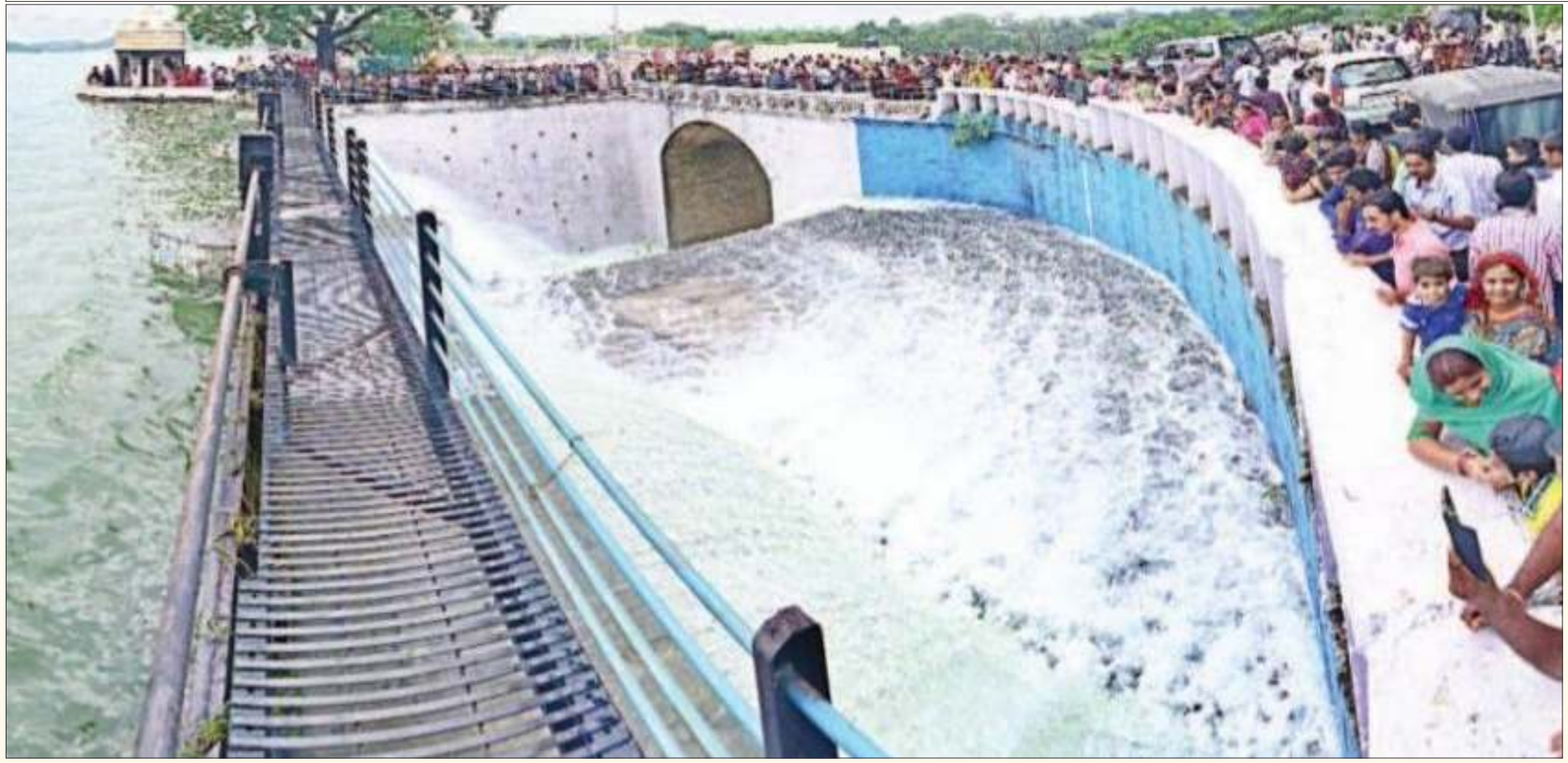

फतहसागर झील लबालब : जल संसाधन विभाग में उपलब्ध आंकड़ों के मुताबिक फतहसागर वर्ष 1970 से पिछले 53 वर्षों में 28 बार लबालब हो चुका है। पिछोला की तरह ही फतहसागर की भराव क्षमता 11 फीट थी। उस पर लोहे के दो फीट ऊँचे मजबूत चार गेट लगाये गये, जिससे इसकी भराव क्षमता 13 फीट हो गई। मानसून की विदाई के समय प्रतिवर्ष ओवरफ्लो गेट पर लकड़ी के पटिये लगाकर 7–8 इंच अतिरिक्त पानी फतहसागर में रोका जाने लगा। वर्ष 2014 में ओवरफ्लो गेट की ऊँचाई 2 से बढ़ाकर 3 फीट कर दी। इस हेतु स्थायी रूप से लोहे की मजबूत चद्दरें लगवायी गयी। ओवरफ्लो गेट की स्थायी तौर पर ऊँचाई बढ़ाने से भराव क्षमता 13 से बढ़कर 14 फीट हो गयी। इस कारण अब फतहसागर ओवरफ्लो होने के बजाय जल स्तर 13 फीट होने और गेट खोलने पर झरना गिरता है। 13 फीट का गेज होने पर फतहसागर के गेट खोलना जरूरी हो जाता है क्योंकि झील में एक फीट अतिरिक्त पानी भरते ही नेहरू गार्डन में पानी भर जाता है। इसके अलावा मदार नहर में बैक वाटर का दबाव बढ़ने से देवाली एवं खारोल कॉलोनी क्षेत्र में नहर के डाउन स्ट्रीम की कॉलोनियों में सीपेज की समस्या काफी बढ़ जाती है। खारोल कॉलोनी में मस्जिद के पास झील सर्वोच्च जल स्तर के समय भारी मात्रा में पानी बहता हुआ देखा गया है। वर्ष 2014 में पहली बार फतहसागर 14 फीट के अधिकतम् स्तर तक भर गया। तब इसका पानी सड़क पर आना शुरू हो गया लेकिन नेहरू पार्क में पानी भरने लगता है एवं जल स्तर उतरने पर ही इसे व्यवस्थित करना संभव हो पाता है। इस दौरान नेहरू पार्क की दशा अत्यन्त दयनीय होती है। इसकी सुन्दरता को सदाबहार रखने हेतु इसके भूस्तर को ऊँचा उठाना आवश्यक है क्योंकि फतहसागर शहर का मुख्य पेयजल स्रोत है। इसकी भराव क्षमता 14 फीट करने से अधिक पेयजल उपलब्ध हो सकता है। इसके लिए जल संसाधन विभाग, नगर विकास प्रन्यास एवं सार्वजनिक निर्माण विभाग में परस्पर अधिक समन्वय की आवश्यकता है।

फतहसागर झील लबालब माह एवं दिनांक

वर्ष	माह एवं दिनांक
1973	26 अगस्त
1975	23 अगस्त
1976	3 सितम्बर
1977	28 अगस्त
1978	19 अगस्त
1980	10 अगस्त
1983	8 अगस्त
1984	13 अगस्त
1985	14 अक्टूबर
1989	5 सितम्बर
1990	1 सितम्बर
1992	12 अगस्त
1994	27 अगस्त
1996	25 सितम्बर
2005	25 सितम्बर
2006	12 अगस्त
2010	9 सितम्बर
2011	3 सितम्बर
2012	12 सितम्बर
2013	14 अक्टूबर
2014	13 सितम्बर (14 फीट होने पर गेट खोले)
2015	13 अगस्त*
2016	21 अगस्त*
2017	2 अगस्त*
2019	2 सितम्बर*
2020	7 अक्टूबर *
2021	7 अक्टूबर*
2022	14 अगस्त *

*जल स्तर 13 फीट होने पर सभी गेट खोले गये।
अगस्त में 14 बार : 50%
सितम्बर में 10 बार: 36%
अक्टूबर में 4 बार : 14%

झील का नियमित छलकाव हो : फतहसागर झील जब छलकती है तो इस मनोहरी दृश्य को देखने देशी व प्रवासी पर्यटकों के साथ स्थानीय नागरिकों का मेला लग जाता है। यह दृश्य अद्भुत होता है। रंग–बिरंगी प्रकाश व्यवस्था से इस दृश्य के सौन्दर्य में चार चाँद लग जाते हैं। यदि प्रत्येक दिन सायंकाल में एक निर्धारित समय पर या एक या दो घण्टे के लिए उच्च क्षमता के पम्पों की सहायता से इस झरने को कृत्रिम तरीके से छलकाया जाना चाहिये। इसके साथ ही पुलिया की चौड़ाई में भी वृद्धि की जानी चाहिये। विपरीत दिशा (नाले) में भी कृत्रिम संगीतमय झरना बनाया जाये, सुन्दर प्रकाश व्यवस्था के साथ चारों ओर से दृश्य देखने के लिए विशेष व्यवस्था हो। यह पर्यटकों को आकर्षित करेगा एवं निश्चित समय पर छलकने वाले इस 'वाटर फॉल' को प्रत्येक पर्यटक अवश्य देखना चाहेगा।

आकर्षक झरना : फतहसागर ओवरफ्लो पॉइन्ट के पास मोतीमगरी की पहाड़ी से सटा एक आकर्षक झरना ''वाटर फॉल'' बनाया गया है। यहाँ से पानी गिरता है। यह झरना पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र बन गया है। इस क्षेत्र के सौन्दर्यीकरण में अभिवृद्धि करता है।

फतहसागर
पूर्ण भराव स्तर पर विहंगम नजारा

फतहसागर की पाल पर हरियाली अमावस्या के मेले का इन्तजार उदयपुरवासी एवं आसपास स्थित गांवों के लोग बड़ी बैचेनी से करते हैं। इस मेले के समय यह झील साधारणतया पूर्ण भराव अवस्था पर होती थी। झरना गिरता है जिसे मेले में आने वाला प्रत्येक व्यक्ति देखने का लुत्फ उठाता है। समय के साथ इस झील का पानी पेयजल के रूप में उपयोग किया जाने लगा तथा झील एक स्तर से अधिक खाली होने लगी। झील का पूर्ण भराव काफी अन्तराल पर होने लगा तथा हरियाली अमावस्या पर तो इस दशक से पहले के वर्षों में शायद ही यह नजारा देखने को मिला था। पिछले 11 वर्षों में यह झील 10 बार छलकी। फतहसागर पाल पर विविध फूलों एवं सुन्दर पौधों की प्रदर्शनी, मिलिट्री अस्त्र-शस्त्र प्रदर्शनी, पेन्टिंग्स प्रदर्शनी एवं विविध सांस्कृतिक गतिविधियां समय-समय पर आयोजित होती रहती है। ये गतिविधियाँ वर्षभर एक निश्चित समय पर आयोजित होनी चाहिये, जिससे पर्यटक भी इसका आनन्द उठा सकें।

मोती मगरी से पूर्ण भराव स्तर पर फतहसागर

दक्षिणी छोर से पूर्ण भराव स्तर पर फतहसागर

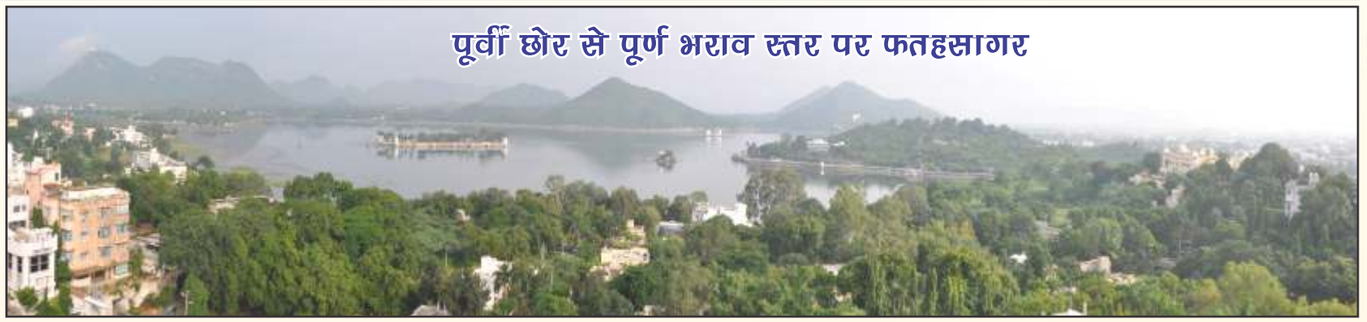

पूर्वी छोर से पूर्ण भराव स्तर पर फतहसागर

मोती मगरी - सर्पाकार मार्ग - पाल रपट - हरीतिमा से भरपूर अद्वितीय दृश्य

– एक तरफ जगप्रसिद्ध फतहसागर झील और दूसरी ओर पूरा शहर। इसके बीच में मोती मगरी स्थित महाराणा प्रताप स्मारक। स्मारक स्थल पूर्णतया वृक्षों से आच्छादित है। यह शहर का एक सर्वश्रेष्ठ ऑक्सीजन हब बना हुआ है। नियमित वृक्षारोपण एवं सभी ऋतुओं में हरे–भरे रहने वाले वृक्षों की बहुतायत होनी चाहिये।

– झीलों की नगरी उदयपुर में फतहसागर झील लबालब होने से मानो कुदरत ने कूँची से खूबसूरती के रंग भर दिये हों। झील के पार्श्व भाग पर दिख रहे प्रकृति के सौन्दर्य से भरपूर प्रताप स्मारक, मोती मगरी एवं उदयपुर शहर का हरियाली से भरा हुआ आवासीय शहर।

मोती महल

फतहसागर
झील में वर्षा ऋतु में विविध जल स्रोतों से जल समावेश

फतहसागर में तीन स्रोतों से जल का समावेश होता है – स्वरूपसागर लिंक नहर से, मदार नहर एवं बड़ी तालाब से।

स्वरूपसागर लिंक नहर : स्वरूपसागर से फतहसागर में जुड़ी हुई लिंक नहर के माध्यम से फतहसागर में सबसे अधिक पानी की आवक होती है। पिछोला का पानी ही फतहसागर को 11 फीट तक भरता है। इसके बाद 2 फीट पानी मदार नहर से ही भरा जाता है।

स्वरूप सागर लिंक नहर से पानी की आवक

प्रदूषित लिंक नहर

मदार छोटा एवं बड़ा : शहर से लगभग 14 कि.मी. दूर मदार छोटा तालाब स्थित है। इसकी भराव क्षमता 225 एमसीएफटी है और 21 फीट पानी भरता है। इस तालाब से करीब 2 कि.मी. दूर उत्तर में मदार बड़ा तालाब स्थित है। इसकी भराव क्षमता 275 एमसीएफटी है। इसमें 24 फीट पानी भरता है। दोनों तालाबों का पानी प्राकृतिक नालों के माध्यम से चिकलवास फीडर तक पहुँचता है। फीडर का ओवरफ्लो पानी आयड़ नदी के माध्यम से उदयसागर तथा वहां से मदार नहर (चिकलवास फीडर) के माध्यम से फतहसागर तक आता है।

मदार नहर से पानी की आवक

लिंक नहर एवं प्रदूषण : स्वरूपसागर एवं फतहसागर झील के मध्य स्थित लिंक नहर के माध्यम से सीसारमा नदी, देवास प्रथम एवं देवास द्वितीय के पिछोला झील तंत्र में समाहित पानी को फतहसागर भरने हेतु भी छोड़ा जाता है। जब तक फतहसागर और पिछोला दोनों का जल स्तर एक समान यानी 11 फीट तक नहीं पहुंच जाता है। वर्षा के दौरान लिंक नहर में पानी का बहाव रहता है। शेष अवधि में इसमें पानी एक स्थान पर ठहरा रहने के कारण इसमें काई, जलकुम्भी, जलीय वनस्पति, प्लास्टिक अवशेष आदि का निर्बाध फैलाव हो जाता है जिससे पानी में सड़ान्ध पैदा होने से बहुत गन्दगी हो जाती है। इस लिंक नहर की नियमित साफ–सफाई की शायद कोई व्यवस्था नहीं होने से पिछोला तंत्र (स्वरूपसागर) के भराव के साथ फतहसागर को भरने के लिए पानी छोड़ने के समय उक्त समस्त गन्दगी फतहसागर में चली जाती हैं। अतः फतहसागर में उक्त पानी को छोड़ने से पूर्व लिंक नहर की समुचित साफ–सफाई की व्यवस्था की जानी चाहिये ताकि फतहसागर का पानी प्रदूषित ना हो।

बड़ी तालाब (10 कि.मी.) : शहर से 10 कि.मी. दूर बड़ी तालाब स्थित है। इस तालाब की भराव क्षमता 32 फीट है तथा इसमें 368 एमसीएफटी पानी संग्रहीत होता है। इसका केचमेन्ट एरिया कम होने से यह पिछले 12 वर्षों में मात्र दो बार भरा है। इसके पूर्ण भराव उपरान्त ओवरफ्लो होने पर प्राकृतिक नाले के माध्यम से इसका पानी भी फतहसागर में समाहित होता है।

फतहसागर से पिछोला झील तंत्र में जल आवक : एक ऐतिहासिक क्षण

एक झील लबालब होने पर दूसरी को भरने की नायाब इंजीनियरिंग वाले झीलों के शहर उदयपुर में 9 अगस्त, 2022 को लिंक नहर तंत्र ने फतहसागर से पानी बहाकर पिछोला को भरने का इतिहास रच दिया। प्रतिवर्ष पिछोला से भरने वाली फतहसागर झील ने इतिहास में पहली बार पिछोला तंत्र को पानी दिया है। फतहसागर झील वर्ष 1882 में बननी शुरू हुई। कार्य वर्ष 1890 में पूर्ण हुआ और तभी स्वरूपसागर–फतहसागर लिंक नहर भी बनी। तब से लेकर अब तक के 132 वर्षों में हमेशा पिछोला से ही फतहसागर को भरा जाता रहा है, जब तक कि दोनों झीलों का जलस्तर 11–11 फीट का न हो जाए। यह लेवल आते ही लिंक नहर बंद कर दी जाती है क्योंकि इसके बाद फतहसागर का पानी स्वरूपसागर (पिछोला तंत्र) की ओर बहते हुए गुमानियावाले नाले में आयड़ नदी के रास्ते उदयसागर में चला जाता है।

लिंक नहर बन्द करने पर फतहसागर को 11 फीट भरने के पश्चात् मदार नहर के पानी से इसकी क्षमता 13 फीट तक भरा जाता रहा है। पिछोला का निर्माण महाराणा लाखा (वर्ष 1380 के आसपास) के काल में हुआ था। 510 वर्ष बाद (वर्ष 1890 में) देवाली तालाब का महाराणा फतहसिंह द्वारा पुनर्निर्माण कराने के कारण यह झील उनके नाम अर्थात् फतहसागर झील के नाम से प्रसिद्ध हुई। पिछोला और फतहसागर दुनिया के पहले वाटर लिंक सिस्टम हैं जिसमें परस्पर पानी का आवाह–प्रवाह प्राकृतिक रूप से होता है।

माह अगस्त, 2022 में मानसून की उल्टी चाल के कारण इस बार जिले में औसत 360.80 मि.मी. वर्षा के मुकाबले अब तक 441.76 मि.मी. बारिश हुई है यानी 80.96 मि.मी. ज्यादा, लेकिन पिछोला को भरने वाले केचमेन्ट क्षेत्र नाई में 274 मि.मी. बारिश ही हो पाई, ऐसे में मानसून की शुरूआत से अब तक पिछोला में महज 1.5 फीट ही भरकर 6.10 फीट के स्तर तक ही पहुंच पाई। दूसरी ओर फतहसागर को भरने वाले केचमेन्ट क्षेत्र मदार में 498 मि.मी. और गोगुन्दा में 617 मि.मी. बारिश होने से फतहसागर 8 अगस्त, 2022 को ही अपनी पूरी क्षमता यानी 13 फीट तक भर गया। मानसून की शुरूआत में इस झील का जल स्तर 5 फीट था जो डेढ़ माह में ही 8 फीट तक बढ़ गया यानी कुल 13 फीट की क्षमता तक लबालब हो गया। फतहसागर–स्वरूपसागर लिंक नहर के गेट 4 इंच खोले गये। इससे फतहसागर से 70 क्यूसेक (1981 लीटर पानी प्रति सैकेण्ड) पानी पिछोला में छोड़ा गया। मदार नहर में 2.3 फीट बहाव था, यदि फतहसागर से आवक इसी प्रकार जारी रही तो पिछोला 11 फीट के स्तर तक भरा जा सकता है क्योंकि इस स्तर पर दोनों झीलों का जल स्तर बराबर रहता है। इसके उपरान्त कितना भी पानी छोड़ा जावे, वह पिछोला तंत्र में जाने के बजाय स्वरूप सागर से ओवरफ्लो होने लगेगा। यही कारण है कि पिछोला से फतहसागर को भी 11 फीट तक ही भरा जा सकता है। 13 अगस्त, 2022 से सीसारमा नदी में जल की आवक बढ़ जाने के कारण इस लिंक नहर का गेट बन्द कर दिया गया।

फतहसागर – मनोहरी एवं भव्य दृश्य – सूर्यास्त एवं रात्रिकालीन

फतहसागर – आंशिक रिक्त अवस्था में

फतहसागर के आंशिक रूप से खाली होने पर इसकी सुन्दरता में गिरावट आती है। इस दर्शनीय झील को पूरे वर्ष भरा रखा जाये। इसके चारों ओर सुन्दर प्रकाश व्यवस्था हो। उच्च स्तरीय सड़क, फुटपाथ विकसित हो। निर्धारित स्थान पर ही फूड हब बने। इसके चारों ओर स्थित पहाड़ियों पर सघन वृक्षारोपण हो। इस झील में किसी भी क्षेत्र से गन्दगी, गन्दा पानी, सीवरेज आदि का प्रवेश न हो, इसका विशेष ध्यान रखा जावे। धार्मिक त्यौहारों पर झील में विसर्जन पूर्ण श्रद्धा के साथ सांकेतिक हो जिससे विसर्जनोपरान्त मूर्तियों के अवशेष, पूजन सामग्री आदि पानी पर न तैरे व इनकी अवहेलना न हो।

- फतहसागर का जल स्तर घटने पर रानी रोड़ छोर का पेटा उघड़ने लगता है। इस समय झील को निश्चित गहराई तक गहरा करने का प्रयास निरन्तर पीपीपी मोड़ पर होना चाहिये। इसके अतिरिक्त इस छोर पर मिट्टी के छोटे–छोटे टापू बनाये जाने चाहिये जिससे सर्दियों में प्रवासी एवं स्थानीय पक्षी यहाँ पड़ाव डाल सकें एवं झील की सुन्दरता में अभिवृद्धि कर सकें। पक्षी प्रेमी शहर से दूर गांवों में स्थित तालाबों के साथ फतहसागर रानी रोड के किनारे पर भी पक्षियों की गतिविधियों को देखकर आनन्द प्राप्त कर सकें।
- फतहसागर झील का पश्चिमी भाग (नेहरू पार्क के पिछवाड़े) का उघड़ा पेंदा, जहाँ पानी की पर्याप्तता पर सर्दियों में देशी–प्रवासी पक्षी यहाँ पड़ाव डालते हैं। इस क्षेत्र को गहरा कर थोड़ी–थोड़ी दूरी पर मिट्टी से ऊँचे स्थान बना देने चाहिये, जहां पर पक्षी धूप सेवन व स्नान के साथ चुग्गा–पानी प्राप्त कर सके।

फतहसागर – जेट एण्ड फ्लोटिंग फाउण्टेन : गुरू गोविन्द सिंह पार्क के सामने (पूर्व फाउण्टेन स्थल पर) सिंगापुर नदी पर स्थित लायन फाउण्टेन की तर्ज पर विभिन्न रूप में विकसित फाउण्टेन स्थापित किये जा सकते हैं। लायन के स्थान पर राष्ट्रीय पक्षी मोर या अन्य प्राणी का स्वरूप भी दिया जा सकता है।

झील में तैरते हुए फव्वारें, झील की सुन्दरता में अभिवृद्धि ही नहीं करते बल्कि वहाँ के मौसम को बहुत सुहावना बना देते हैं। फव्वारों से झील के पानी में ऑक्सीजन की मात्रा में वृद्धि होती है तथा वह जलीय जीवों एवं मछलियों के लिए लाभदायक है। फतहसागर जैसी बड़ी झील में अनेक स्थानों पर ऐसे फव्वारें लगाये जाने चाहिये। झील की सतह पर दिखने वाले फव्वारों के स्थान पर यदि पानी की सतह से नीचे रहने वाले फव्वारें स्थापित किये जाये तो अति उत्तम होगा। इस प्रकार के फव्वारें कश्मीर की डल झील में देखे गये हैं। इसका एक फोटो नीचे दिया गया है।

फतहसागर की शान : छोटी तलाइयाँ

फतहसागर झील तंत्र में प्रकृति ने हमें तीन छोटी तलाइयाँ उपला तालाब, छोटी तलाई एवं निचली तलाई इसके प्राकृतिक सौन्दर्य की अभिवृद्धि के लिए प्रदान की है। ये तीनों तलाइयाँ कठिन दौर से गुजर रही है। इनमें गन्दे पानी से खरपतवार, जलीय घास टाईफा आदि निर्बाध रूप से पसर रही है। इनके अतिरिक्त इन पर अतिक्रमण के प्रयास भी हो रहे हैं। इन तलाइयों के पास रहने वाले लोगों एवं प्रतिष्ठानों को चाहिये कि विरासत में मिली इस प्राकृतिक निधि को संरक्षित ही नहीं करें वरन् इनके विकास में भी सहयोग करें। कम से कम इन्हें अतिक्रमण होने से तो बचा ही सकते हैं।

फतहसागर के दक्षिण किनारे पर स्थित उपला तालाब पूर्ण जल भराव स्तर पर।
जलकुंभी, जलीय खरपतवार, काई, टाईफा, प्लास्टिक अवशेष आदि से मुक्त होने पर यह छोटी झील कितनी सुन्दर प्रतीत होती है!

फतहसागर

उपला तालाब

फतहसागर

उपला तालाब

शेष बचे उथले क्षेत्र को भी मिट्टी निकालकर उपला तालाब में मिला देना चाहिये।

उपला तालाब : यह तलाई मुख्य फतहसागर के दक्षिणी–पश्चिमी छोर पर स्थित है, जिसे उपला तालाब के नाम से जाना जाता है। इसके एक ओर होटल शेरेटन, दूसरी ओर रोटरी बजाज भवन, संजय गांधी गार्डन तथा तीसरी तरफ रानी रोड श्मशान से घिरा हुआ एवं अतिक्रमण ग्रस्त है। पश्चिम की ओर से सीवरेज समाहित होने से यह तलाई पूर्णतः प्रदूषित है एवं वर्षभर जलकुम्भी या जलीय घास, काई आदि से प्लावित रहती है। फतहसागर की अद्भुत सुन्दरता में यह एक दाग है। इस तलाई को अतिक्रमण से मुक्त करने के साथ विकसित करने हेतु पूर्ण तालाब का दर्जा दिया जाये तथा इसकी गहराई बढ़ाने के साथ आस–पास स्थित उथले क्षेत्र जिस पर वर्तमान में वृक्षारोपण कर तारदार एवं कुछ क्षेत्र पर पक्की बाउण्ड्रीवाल बनाई गई है, इस संपूर्ण क्षेत्र को इस तालाब में समाहित किया जा सकता है। इससे भविष्य में भी अतिक्रमण की कोई संभावना नहीं रहेगी एवं जल संग्रह की क्षमता में भी वृद्धि होगी। कुछ क्षेत्रों पर भराव डालकर तालाब की उच्चतम भराव क्षमता से उसे बाहर निकालने का प्रयास किया जा रहा है, जिसे समय रहते रोका जाना चाहिये। साथ ही पर्यटकों के लिए मुख्य आकर्षण केन्द्र के रूप में परिवर्तित करने हेतु पेडल बोट, शिकारे, छोटी नावें आदि संचालित की जा सकती है। इसके एक तरफ फूड हब विकसित करते हुए इसमें फ्लोटिंग फव्वारें भी लगाये जा सकते हैं।

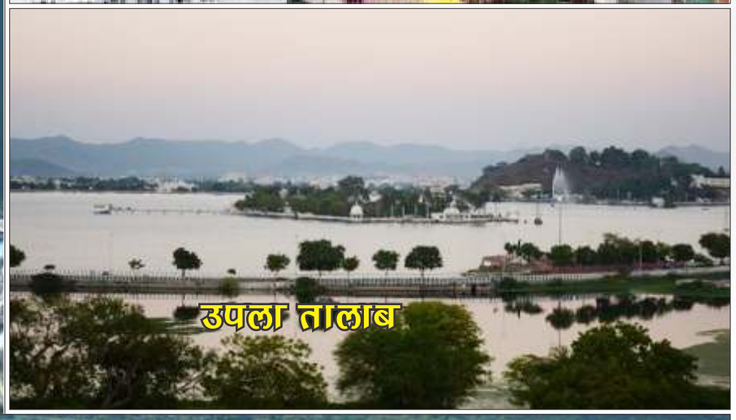

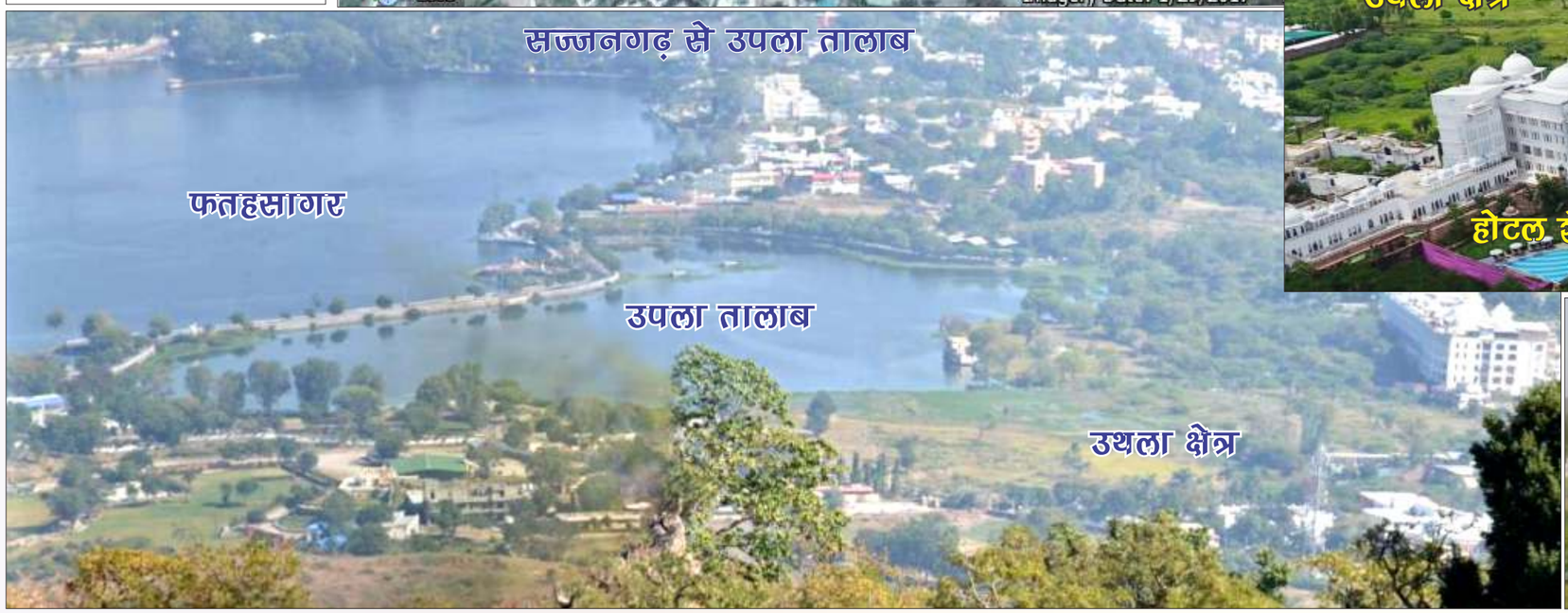

उपला तालाब का प्रदूषित स्वरूप : इस तालाब में मस्तान बाबा एवं उसके आसपास के क्षेत्र की आवासीय कॉलोनियों से गन्दा पानी एवं सीवरेज नियमित रूप से समावेश होता था। इसके फलस्वरूप इस तालाब में जलकुम्भी अधिकता से फैलती थी तथा किसी वर्ष इसे समय पर नहीं हटाने पर इसमें सुन्दर फूल भी खिलते थे, जो दर्शनीय होता था लेकिन यह इस झील के लिए घातक साबित होता था। वर्तमान में इस तलाई के दक्षिण–पश्चिम क्षेत्र पर सीवरेज लाइन डालकर सीवरेज एवं गन्दा पानी रोकने का प्रयास किया जा रहा है। तलाई को सीवरेज मुक्त करके साफ–सुथरा रखकर नौकायन एवं वाटर स्पोर्ट्स हेतु उपयोग में लिया जा सकता है। इस तालाब में अतिक्रमण कर एवं नियमानुसार कुछ मकान बना दिये गये हैं, उन्हें बाजार मूल्य पर अधिगृहीत कर किसी अन्य विकसित स्थान पर भूमि आवंटित कर इस पूरे क्षेत्र को तालाब में समावेश करने हेतु एक सकारात्मक प्रयास करने की आवश्यकता है।

यह तलाई नहीं बल्कि जलकुंभी से ढका हुआ मैदान नजर आता है

पूर्णतया जलकुंभी से आच्छादित

काई से आच्छादित उपला तालाब

उपला तालाब के पानी के छोर से ऊपर उठी हुई भूमि, कंटीली झाड़ियाँ एवं अतिक्रमण प्रयास क्षेत्र
इसकी मिट्टी निकालकर मुख्य उपला तालाब में मिलाया जा सकता है।

विरासत में मिले फतहसागर तंत्र के इस महत्त्वपूर्ण तालाब को अतिक्रमण एवं प्रदूषित होने से बचाकर
अति सुन्दर पर्यटक स्थल के रूप में परिवर्तित करना हम सभी का नैतिक कर्त्तव्य है।

इस तालाब के कुछ हिस्से को अतिक्रमण मुक्त रखने के लिए नगर विकास प्रन्यास ने सीमेन्ट के खंभों के साथ कांटेदार तारों से तारबन्दी कर वृक्षारोपण भी किया, परन्तु यह प्रयास कारगर साबित नहीं हुआ एवं वर्तमान में पक्की चारदीवारी बनाने का कार्य प्रगतिरत है। इस तलाई को सदैव के लिए अतिक्रमण मुक्त रखने के लिए इसके दक्षिणी–पश्चिमी ऊपरी क्षेत्र को तालाब में समाहित कर उसकी समान गहराई से मिट्टी निकालकर चारों तरफ रिंग रोड बनाकर बंसियाँ लगवा देनी चाहिये। मिट्टी की खुदाई के लिए गर्मियों में नगर विकास प्रन्यास मात्र दो से तीन जेसीबी लगाकर ईंट–भट्टें, उद्यान एवं फार्म हाउस मालिकों को ट्रेक्टर/डम्पर को निःशुल्क भरकर ले जाने का अवसर देवें ताकि समुचित मिट्टी निकालकर इस तालाब का कायाकल्प किया जा सकेगा एवं तालाब को अतिक्रमण से मुक्त करना संभव हो सकेगा।

उपला तालाब रिक्त अवस्था में

उपला तालाब का अविकसित क्षेत्र

जलकुम्भी व जलीय खरपतवार से मुक्ति : इस तालाब को अतिक्रमण व खरपतवार मुक्त कर वाटर स्पोर्ट्स हब के रूप में भी विकसित किया जा सकता है। उपला तालाब एवं मुख्य झील फतहसागर को जोड़ने वाली वर्तमान साधारण पुलिया को पर्याप्त ऊँचे पुल के रूप में विकसित करना चाहिये जिससे मुख्य झील की ओर नौकायन संभव हो सकेगा। इसमें आधुनिक पैडल युक्त नावें, सिकारें आदि चलाये जा सकते हैं। जलकुम्भी और जलीय खरपतवार, असमान चट्टानों से मुक्त एवं समान गहराई, चारों ओर पैदल चलने योग्य रिंग रोड़ हो जिससे भविष्य में अतिक्रमण नहीं होने के साथ, सीवरेज व गन्दगी युक्त पानी झील में नहीं गिर सकेगा।

भावी विकास की संकल्पना

छोटी तलाई : उपला तालाब के करीब 300 मीटर आगे होटल रानी विलेज के पास, होटल इन्द्रलोक के पीछे एवं फतहसागर के किनारे रानी रोड़ पर स्थापित ओपन जिम के सामने एक तलाई स्थित है, जिसे छोटी तलाई कहा जाता है। साधारणतया प्रतिवर्ष फतहसागर के भरने के साथ यह तलाई भी भरती है तथा फतहसागर के खाली होने के साथ इस तलाई का जल स्तर भी गिरता है। यह तलाई कंटीली झाड़ियों, टाइफा ग्रास एवं जलीय खरपतवार से प्लावित रहती है। इस तलाई को एक दर्शनीय एवं उपयोगी तलाई के रूप में विकसित किया जा सकता है। इस तलाई को नगर विकास प्रन्यास द्वारा कंटीली झाड़ियों एवं अन्य खरपतवार से मुक्त कर अपने पूर्ण आकार के साथ समान रूप से मिट्टी निकालकर गहरा करने का प्रयास सराहनीय है। इस प्रयास के फलस्वरूप यह छोटी तलाई बड़े आकार की दिखलाई पड़ रही है। इस तलाई के ठीक सामने एक छोटी पहाड़ी पर एक पार्क विकसित किया गया है जो अभी काफी अविकसित हैं, इसके समुचित विकास के साथ नगर निगम द्वारा स्थापित ओपन जिम के रखरखाव पर समुचित ध्यान देने की आवश्यकता है।

इस तलाई में कश्मीर की डल झील की तर्ज पर शिकारों की यात्रा कराकर पर्यटकों एवं शहरवासियों को रोमांचकारी अनुभव कराया जा सकता है। यह कार्य नगर विकास प्रन्यास पीपीपी मोड़ पर संपादित करवा सकता है।

काई, जलीय घास, टाईफा से अटी हुई छोटी तलाई

राजस्व लेखे के अनुसार यह तलाई पूर्णतया डिसिल्टिंग कर जल भराव क्षमता में वृद्धि के साथ अतिक्रमण मुक्त हो सकेगी

ओपन जिम के समुचित ररखरखाव के साथ उससे लगे पार्क को पूर्णतया विकसित किया जाना चाहिये।

निचली तलाई : यह तलाई मुख्य झील फतहसागर के पश्चिम में झील दर्शन एवं रानी रोड़ पुलिया के मध्य स्थित है। यह झील काई, जलीय घास एवं किनारों पर अवांछित कांटेदार पौधों व अन्य खरपतवार से ग्रसित होकर काफी प्रदूषित है। फतहसागर की अद्‌भुत सुन्दरता में यह एक अविकसित क्षेत्र है। इस तलाई को विकसित कर पर्यटकों के लिए एक अन्य आकर्षण केन्द्र के रूप में परिवर्तित किया जा सकता है। इस तलाई को निम्न उपायों के माध्यम से विकसित किया जा सकता है :–

- इस तलाई के पूर्व राजस्व रिकॉर्ड के अनुसार के इसकी सीमाओं को रेखांकित कर इसे अतिक्रमण मुक्त करने का पूर्ण प्रयास किया जाना चाहिये।
- इस तलाई की वर्तमान अविकसित पुलिया को पर्याप्त ऊँचा उठाकर मुख्य झील से जोड़ देना चाहिये जिससे बैट्री एवं पैडल चलित नावें, तलाई से मुख्य झील में जा सके। इसे एक समान गहराई, झाड़ियों एवं खरपतवार मुक्त रखा जावे। पेन्दे में टाइल्स या सीमेन्ट कंकरीट युक्त फर्श निर्मित किया जावे।
- इस झील को शहर में पूर्ण लम्बाई के स्वीमिंग पूल की तरह विकसित किया जाना चाहिये, जहाँ तैरने व डाई लगाने की सभी सुविधाएं हो। साथ ही यहाँ पर तैरना वैधानिक हो।
- साथ ही छोटी नावें, पेडल बोट, सिकारे आदि चलाने की व्यवस्था हो तथा इसके एक तरफ फूड हब भी विकसित किया जा सकता है।
- तलाई की सफाई नियमित रूप से हो एवं गन्दगी का किसी भी रूप में इसमें समावेश न हो।
- झील के पश्चिमी छोर पर कच्ची सड़क क्यों बनाई गई, इससे उस दिशा में स्थित पहाड़ी एवं जंगल से जंगली जानवर अपनी प्यास बुझाने के लिए आने से डरेंगे।
- झील के उत्तरी छोर के किनारे पर करीब 5–6 फीट चौड़ा सीमेन्ट–कंकरीट युक्त वॉकिंग ट्रेक बनाया गया है, जो कि प्रशंसनीय है। यह ट्रेक तलाई में खड़े किये गये खंभों पर निर्मित किया गया है, परन्तु यह आधुनिक तकनीक एवं मापदण्डों से नियोजित नहीं है। इसका ऊपरी स्तर समान नहीं होने से वरिष्ठ नागरिकों के लिए प्रातः एवं सायंकालीन भ्रमण हेतु यह आरामदायक एवं उपयुक्त नहीं है। इसे झील के किनारे आरसीसी की पक्की दीवार बनाकर कन्ट्री लीवर के रूप में बनाया जाना चाहिये था। तलाई में खंभे खड़े करना उचित प्रतीत नहीं होता है।

नीमच माताजी मन्दिर से निचली तलाई का भव्य स्वरूप : दो बड़ी पहाड़ियों के मध्य स्थित